7

जिम्री

कटनी का नियम

वचन पाठः 1 राजाओं 16:8-20

जिम्री: आपने उसके बारे में सुना है ? हमें अपनी शुद्धता के लिए यूसुफ, अपने विश्वास के लिए अब्राहम, अपने डीलडौल के लिए शाऊल और अपने मन के लिए दाऊद का स्मरण है, परन्तु जिम्री के विषय में सोचने पर अपके मन में क्या आता है ? शायद कुछ नहीं। जिम्री का नाम आने पर दिमाग खाली रहने देने का कारण यह है कि वचन में अधिक देर तक नहीं मिलता। उसका शासन आंख के झपकने की तरह यानी 885 ई.पू. में केवल एक सप्ताह रहा, जो किसी भी उत्तरी राजा का सबसे छोटा शासनकाल था। इसमें विश्वास दिलाने वाला दावा हो सकता था कि वह वास्तव में राजा नहीं था; वह ''भावी'' राजा ही था, जो केवल थोड़ी देर के लिए उठा जिस कारण उसे उत्तरी राजाओं की सूची में शामिल करके सम्मान नहीं दिया जाना चाहिए।

केवल छह आयतों वाली उसकी ईश्वरीय जीवनी, एक संक्षिप्त, भावनात्मक कहानी है:

> यहूदा के राजा आसा के सत्ताइसवें वर्ष में जिम्री तिर्सा में राज करने लगा, और तिर्सा में सात दिन तक राज करता रहा। उस समय लोग पलिश्तियों के देश गिब्बतोन के विरुद्ध डेरे किए हुए थे। तो जब उन डेरे लगाए हुए लोगों ने सुना कि जिम्री ने राजद्रोह की गोष्ठी करके राजा को मार डाला, तब उसी दिन समस्त इस्राएल ने ओम्री नाम प्रधान सेनापति को छावनी में इस्राएल का राजा बनाया। तब ओम्री ने समस्त इस्राएल को संग ले गिब्बतोन को छोड़कर तिर्सा को घेर लिया। जब जिम्री ने देखा कि नगर ले लिया गया है, तब राजभवन के गुम्मट में जाकर राजभवन में आग लगा दी, और उसी में स्वयं जल मरा। यह उसके पापों के कारण हुआ क्योंकि उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, क्योकि वह यारोबाम की सी चाल और उसके किए हुए और इस्राएल से करवाए हुए पाप की लीक पर चला (16:15-19)।

जिम्री यारोबाम के रास्ते पर चलने वाला आदमी था। उसने सिंहासन पर बैठकर इस्राएल पर शासन करने की कोशिश की, परन्तु उसकी कोशिश नाकाम रही, जो केवल सात दिन तक चली। हमला करने के समय इस्राएल के सैनिक बल फिलस्तीन से ''परेशानी का कारण'' नगर को वापस लेने के प्रयास में गिब्बतोन पर कब्जा करने में लगे हुए थे। इस्राएल की सेना की अगुआई ओम्री कर रहा था, जो लोगों में विशेष रूप से प्रसिद्ध था। जब लोगों ने सुना कि जिम्री ने एला को मार डाला है तो उन्होंने ओम्री को ''पूरे इस्राएल'' का राजा बना दिया। स्पष्टतया जिम्री के पीछे मुट्ठी भर लोग थे, जिन्होंने राजा के रूप में उसके अभिषेक का समर्थन किया था। सो ओम्री ने पहला काम जिम्री से निपटने का किया। उसने तुरन्त तिर्सा की ओर बढ़कर नगर को घेर लिया।

जिम्री ने उसकी दुर्दशा देखी और यह समझकर कि वह मर जाएगा, ऐसे ही हथियार डाल दिए। उसने अपने आप को महल में बन्द कर लिया, इसे आग लगा दी और अपनी जान लेते हुए उसे जला डाला। महिमा की रौश्नी में बाहर जाने के बजाय वह धुएं और अपमान के बादल में घिर गया।

इस प्रकार जिम्री सिंहासन तक ज़बर्दस्ती कब्जा करके आया और उससे ज़बर्दस्ती सिंहासन छीन लिया। जो कुछ उसने एला के साथ किया था, वही ओम्री ने उसके साथ किया। उसे बदले में सुनहरी नियम मिला: ''जैसा तुम दूसरों के साथ करोगे, वैसा ही तुम्हारे साथ किया जाएगा।'' एक ''भावी'' सम्राट यह देखकर कि वह मार डाला जाएगा, आत्महत्या कर बैठा। उसकी मृत्यु की घटना का वर्णन पवित्र आत्मा के द्वारा उस पर परमेश्वर के न्याय के दण्ड के रूप में किया गया है:

> यह उसके पापों के कारण हुआ क्योंकि उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, क्योंकि वह यारोबाम की सी चाल और उसके किए हुए और इस्राएल से करवाए हुए पाप की लीक पर चला (16:19)।

शासन करने का जिम्री का छोटा प्रयास हमारे यह सोचने के लिए होना चाहिए कि जीवन के नियम का हर व्यक्ति को आज नहीं तो कल सामना करना ही पड़ेगा, वह कटनी का नियम है। जिम्री ने इस नियम का सामना किया और जैसा कि सबके साथ होना आवश्यक है, इसने उसे तोड़ डाला। कटनी का यह नियम हमें ''बनाए'' या ''तोड़े'' यह इस पर निर्भर करता है कि हमने इसे कैसे लिया है। जिम्री के संक्षिप्त शासन की पृष्ठभूमि के विपरीत इस नियम के विभिन्न पहलुओं पर विचार करना हमारे लिए लाभदायक होगा।

कटनी: जो बोया वही काटना

इस नियम की पहली सच्चाई, जिसका पता जिम्री ने लगाया वह यह है कि हम वही काटते हैं *जो* हमने बोया होगा। फसल वही मिलती है, जिसका बीज हमने बोया है, उसने हिंसा और हत्या बोई थी, इस विश्वास से कि जिसकी लाठी उसकी भैंस होती है, और शीघ्र ही उसने अपने जीवन के परिणामों को काटा। यीशु ने कहा, ''... क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे'' (मत्ती 26:52)। एक बार बो देने के बाद बीज को बदला नहीं जा सकता, न उसकी फसल को बदला जा सकता है। फसल वही होगी, जो बोया है, वैसे ही जैसे रात के बाद दिन आता है। पौलुस ने हमें इस तथ्य का आवश्वासन दिया है:

> धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा (गलातियों 6:7, 8)।

इस पृथ्वी पर हर मानवीय जीव विचार, बातें और उन कामों के बीज बो रहा है, जो बाद में वृक्ष बनकर कुछ इस जीवन में और कुछ अनन्तकाल में फल देंगे। जीवन की तीन अभिन्न बातें

इस प्रकार हैं:

हम बोने से **बच नहीं सकते**।
हम काटने से बच **नहीं सकते**।
हम जो बोते हैं, उसे काटने से बच **नहीं सकते।**

हमें जीवन के प्रतिकूल बातें करना अच्छा लगता है। यह विचार हम विशेषकर तब व्यक्त करते हैं, जब जीवन में कुछ गलत हो जाता है। उदाहरण के लिए हमारा कोई प्रियजन जो अच्छा भला था, अचानक बीमार पड़ जाता है और हम कहते हैं, ''यह बिल्कुल अच्छा नहीं हुआ!'' हां, मुझे मालूम है कि ऐसे समय आते हैं जब जीवन अच्छा नहीं लगता; परन्तु अधिकतर लोगों के लिए जीवन अद्‌भुत रीति से अच्छा है। आमतौर पर यह हमें वही लौटाता है, जो हम इसे देते हैं। जीवन का साधारण नियम यानी वह नियम जिससे हम पीछा नहीं छुड़ा सकते, वह यह है कि हम वही काटेंगे, जो बोएंगे। अफलातून ने बुराई के विषय में इस सच्चाई को देखा, जैसा कि उसकी इस पुष्टि से पता चलता है कि ''बुराई और इसका प्रतिफल दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।'' सब लोग हर जगह, हर युग में इस सच्चाई को पहचानते हैं जब वे जीवन के अनुभवों की गवाही से गम्भीरतापूर्वक इससे व्यवहार करते हैं। आपने पुरानी कहावत सुनी होगी ''जैसे बछड़ा हज़ारों गायों में से अपनी मां को पहचान लेता है, वैसे ही कर्मों का फल करने वाले को मिल ही जाता है।''

कोई बहस कर सकता है, ''पर मैंने इसके अपवाद देखे हैं! मैं एक दुष्ट आदमी को जानता हूं, जो फल-फूल रहा है।'' ऐसा तर्क पहली बार नहीं दिया गया होगा, क्योंकि सदियों पहले भजन लिखने वाले ने यही तर्क दिया था (भजन संहिता 73)। उसने दुष्ट को फलते-फूलते और धर्मी को सताए जाते देखा था। इस विवाद में झूठ, जैसा कि भजन लिखने वाले ने देखा, वह यह है कि कुछ कटनी तब भी होती है, जब हमारी शारीरिक आंख इसे देख नहीं सकती। हमें यह बात समझनी आवश्यक है कि सारी कटनी इसी जीवन में नहीं होगी। कुछ कटनी यहां होती है, परन्तु अधिकतर कटनी अनन्तकाल में ही होती है।

इस संसार में रहने का मूल नियम है कि जो बाओगे वही काटोगे। मेल-जोल रखने वाले लोगों के मित्र अधिक होते हैं, लगन से काम करने वालों को प्रतिफल मिलता है, ईमानदार लोगों को भरोसा मिलता है आदि। इधर-उधर से स्पष्ट अपवाद मिल जाते हैं। हम ने यह सब देखा है, परन्तु फिर भी जो अपवाद दिखाई देते हैं, अन्त में वे कटनी के समय तक आएंगे, इस जीवन में नहीं तो अनन्तकाल में।

जिम्री को कटनी के नियम का पता था या नहीं या उसे मालूम था और उसने इसे अनदेखा किया, परन्तु इस नियम ने उसके जीवन में काम किया: इसने उसे धन के उसी सिक्के में से लौटाया, जिससे उसने जीवन में निवेश किया था। उससे वही व्यवहार किया गया, जो उसने दूसरों से किया था। यह नियम आपके और मेरे लिए एक ही है। नियम को न जानने की दुहाई देना काम नहीं आएगा। नियम की अनदेखी करना कोई बहाना नहीं बन पाएगा। नियम के साथ निपटने का एकमात्र ढंग इसे समझकर भक्तिपूर्ण जीवन का सकारात्मक बीच बोना है, जो जिम्री ने नहीं किया।

कटनी: जो बोया है उससे कहीं अधिक काटना

कटनी के नियम की दूसरी सच्चाई जो जिम्री को पता चली वह यह है कि फसल बोए गए बीज से कहीं अधिक होती है और कटनी का समय बुआई के समय से कहीं अधिक लम्बा होता है। बीजों का आकार छोटा होता है, परन्तु उनकी फसल उनके आकार से कई गुणा अधिक होती है। एक बीज से तना निकलता है और तने से बीज का बोरा। हम सेब के बीजों को गिन सकते हैं परन्तु एक बीज से कितने सेब होते हैं, यह नहीं गिना जा सकता। फसल हमेशा बोए गए बीज से अधिक होती है। यदि यह सच न होता तो खेती करने का अधिक लाभ न होता।

हमें नहीं मालूम कि जिम्री ने उन बीजों को बोना कब आरम्भ किया, जिनसे यह खतरनाक फसल मिली। उसने शैतानी विचारों की खेती युवावस्था में आरम्भ की कि वह जो चाहे उसे मिल जाए? उसने इस विचार को मानना अपने लड़कपन के समय से आरम्भ किया कि ''यदि तुम इतने बड़े हो कि जो चाहे ले सकते हो, तो तुम्हें उसे ले लेना चाहिए''? हमें नहीं मालूम कि उसने कब बोना आरम्भ किया, परन्तु हम इतना जानते हैं कि अन्त में उसने अपने दिमाग में हत्या के द्वारा सिंहासन पर कब्जा करने की योजना बनाई। फिर वह अपनी योजना को लागू करने के लिए समय और स्थान की खोज करने लगा। योजना को वास्तव में व्यवहार में लाने के लिए अधिक समय नहीं लगा। उचित समय आने पर एला राजा को कुछ ही मिनटों में कत्ल कर दिया गया। बुआई हो चुकी थी। फिर उम्मीद से अधिक फुर्ती से फसल कटने का समय आ गया और यह कटाई बड़ी अद्‌भुत थी! उससे मिली फसल का अनुभव अनन्तकाल तक रहेगा। इस मामले में फसल ने उसकी जान ले ली और पूरे संसार के देखने के लिए उसे ढेर कर दिया। उसके मरने का समय आने से पहले उसने जीवन यात्रा का अन्त होने की त्रासदी को जान लेना था। उसने दूसरों के जीवन में त्रासदी लाई थी और वैसी ही त्रासदी उसके जीवन में आ गई।

मुझे आश्चर्य है कि जिम्री ने विद्रोह के अपने कार्य को कैसे देखा। शायद उसने सोचा, ''मैं जल्दी से एला को मार डालूंगा और कहानी खत्म हो जाएगी। फिर मैं सिंहासन पर बैठ जाऊंगा और पूरा इस्राएल मुझे राजा के रूप में देखकर आनन्दित होगा। मैं सिंहासन पर एक सुरक्षित राजा होऊंगा, क्योंकि मेरी रक्षा करने के लिए पूरी सेना होगी। राज्य मेरा हो जाएगा। सही समय पर सही कार्रवाई करनी चाहिए।'' यदि वह ऐसा सोच रहा था तो उसे आश्चर्य मिलने वाला था। यानी उसने इसकी कटनी करनी थी। लोग उसे राजा नहीं बनने देना चाहते थे। इससे भी बढ़कर सेना का कप्तान ओम्री, जिसके हाथ में सत्ता थी, उसे राजा नहीं बनने देना चाहता था। सही चुने हुए समय पर कुछ बीज बोने की उसकी छोटी सी योजना एक बड़ी विपदा के रूप में आ गई, जो लोगों के बीच में मारे जाने या बन्द कमरे में आत्महत्या करने की दिल दहला देने वाली पसन्द का कारण बनी। अपनी हार से दु:खी और इसका कुछ न कर पाने के कारण जिम्री ने अपने प्राण ले लिए और इस संसार से विनाश के रूप में चला गया। महल के एक तहखाने में दूसरों से छिपे हुए एकान्त से निकलकर उसने अपना प्राण ले लिया और अपने नाम पर एक और काला धब्बा लगा लिया। जो फसल उसे काटनी थी, वह उसके लिए बहुत अधिक थी।

इस बात से अनजान जिम्री परमेश्वर के वचन के शीशे के घर में रह रहा था। ईश्वरीय ऐनक में से परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए इतिहास में पूरे संसार ने उसे देखना और उसका अध्ययन करना था, जो जिम्री ने कटनी के नियम को चुनकर किया। उसने उन सब लोगों को, जिन्होंने

पवित्र शास्त्र को पढ़ना था, एक विरातस दे दी: ''कटनी के नियम की अनदेखी न करो। मैंने की और देखो मेरा क्या बना।''

संसार उसकी विरासत को पढ़ता है, परन्तु जिम्री जो कुछ उसने जीवन में बोया उसे काटते हुए अनन्तकाल में रह रहा है। कटनी पराजय का न खत्म होने वाला अनन्तकाल है, जो आगे बढ़ता रहता है। वह काट रहा होगा, काट रहा होग और काट रहा होगा। सचमुच उसे कठिन ढंग का पता चला कि फसल उससे जो बोया गया है कहीं अधिक और देर तक रहने वाली है। जिम्री वाली गलती न दोहराएं।

हम अपने निर्णय लेते हैं, परन्तु हमारे निर्णय हमारे भविष्य तय करते हैं।

एक विचार बोएं,
व्यवहार काटें।
एक व्यवहार बोएं,
एक जीवन काटें,
एक जीवन बोएं,
भविष्य काटें।

कटनी: दूसरों से प्रभावित कटनी

कटनी के नियम की एक और सच्चाई, जो जिम्री ने पता लगाई, वह यह है कि किसी की कटनी दूसरों के बोने और काटने से प्रभावित हो सकती है। उसने वास्तव में उस फसल में भाग लिया था, जो दूसरों ने काटी थी।

कोई संदेह नहीं कि जिम्री का विश्वास अपने समय की सोच अर्थात उस फिलासफी में था, जो लोकप्रिय थी। एक हत्या यानी नादाब की, उससे पहले हो चुकी थी (15:25-31)। एक और हत्या की भविष्यवाणी येहू नबी द्वारा की जा चुकी थी (16:8-13)। उस समय के अगुओं का विचार था कि किसी परिस्थिति को बदलने का तरीका तलवार लेकर रास्ते में आने वाले हर व्यक्ति को मार डालो और कब्जा कर लो, है। परमेश्वर के लोगों का जीवन और सोच मूर्तिपूजकों जैसी थी। हो सकता है कि उसके आस-पड़ोस में ऐसे रिश्तेदार और मित्र रहते हों, जिन्होंने इस बात की वकालत की कि ''सही समय पर सही व्यक्ति ताकत के बल पर सिंहासन पर कब्जा कर सकता है।'' वह इस प्रकार की सोच से प्रभावित था। परन्तु जो बात इसे समझ नहीं आई, वह यह थी कि यह गन्दी सोच एक प्रकार का बोना था। इससे उस फसल में योगदान मिलना था, जो उसने काटनी थी।

हम शून्यता में नहीं रहते हैं। हर प्रकार के विचार दुष्ट मनों के कूड़ेदानों में से निकलकर हवा में तैरते रहते हैं। उन विचारों को अनुमति दे दी जाए तो वे हमारी सोच का भाग बन सकते हैं। हमारे मनों में प्रवेश करने के बाद वे हमारे स्वभाव को रूप देने लगते हैं और फिर वे हमारी बातों और कामों के द्वारा बाहर आते हैं। किसी के मन के कुएं के अन्दर जो कुछ भी है वह उसके बोलों और कामों की बाल्टी में बाहर आ जाता है (मत्ती 12:25)। जब कटनी का समय आता है तो हमें मानना पड़ेगा कि ''मैं कुछ वह फसल काट रहा हूं जिसे किसी और ने बोया था। उसने मुझे

प्रभावित किया और मुझे बदल दिया। मैंने उसे अपने जीवन में आने दिया और अब उसकी कीमत चुका रहा हूं।'' जो फसल आपको काटनी है, वह उसके लिए, जिसने आपको प्रभावित किया, भूल जाने वाली बात है; आपने जब भी, जैसे भी या जिस भी कारण से बोया हो, काटना तो आपको पड़ेगा।

कुछ साल पहले मैंने एक प्रतिभाशाली आदमी को मसीही कॉलेज से शिक्षा पाने के लिए कहा। वह कॉलेज जाना चाहता था, परन्तु उसके माता-पिता के पास इतने पैसे नहीं थे। उचित प्रोत्साहन मिलने पर वे एक परिवार के रूप में इकट्ठे हो गए और उसे मसीही कॉलेज में जाने में सहायता की। उन्होंने कुछ बचत की हुई थी, जिसका इस्तेमाल करने का फैसला किया गया। वह जवान जितना हो सकता था गरमियों में कमाने के लिए काम करता। उसकी मां ने इस उम्मीद से कि वह चार साल कॉलेज में रहेगा, नौकरी कर ली। यह एक सफल पारिवारिक प्रयास था; वह जवान शीघ्र ही कॉलेज जाने को तैयार था। इस प्राप्ति के बावजूद इस कहानी का अन्त दु:खद है। उस जवान का एक रूममेट था, जिसके नैतिक विचार इतने ऊंचे नहीं थे। समय बीतने पर उसके रूममेट ने उसे नशे की लत लगा दी। जैसे ही कॉलेज के अधिकारियों को इसका पता चला, उसे और उसके रूममेट को अपने और अपने परिवारों के लिए अपमान और बदनामी में कॉलेज छोड़ना पड़ा। उन्होंने जो बोया था, वही काटा। मैं जानता हूं कि वह जवान एक अच्छा आदमी था। वह ऐसा ही रह सकता था, परन्तु उसने किसी दूसरे की बुआई को अपनी बुआई बनने दिया और अन्त में किसी दूसरे की कटनी उसकी, कटनी बन गई।

दूसरे लोग हमारी बुआई और कटनी में योगदान देते हैं। हम उन्हें ऐसा करने की अनुमति देते हैं। हमें अपने विचारों, फिलासफियों, मित्रों और कार्यों को सावधानीपूर्वक चुनना आवश्यक है; क्योंकि वे उस बुआई में प्रवेश कर जाते हैं, जो हम कर रहे होते हैं और उस कटनी में भी, जो हम काटेंगे। आपके विचार और काम आपके ही हों या किसी दूसरे से प्रभावित, आपकी कटनी वैसी ही होगी, जैसा आप बोएंगे।

कटनी: वह काटना जिससे दूसरे प्रभावित होते हैं

जिम्री के विषय में चौथी सच्चाई जो हम देखते हैं, वह यह है कि उसकी कटनी ने दूसरों को प्रभावित किया और करेगी। जिम्री से जुड़ा कोई भी व्यक्ति उस मेल से पछताता होगा।

जिम्री ने एक ऐसा प्रभाव छोड़ा जो कहता है, ''अच्छी बातें, सबसे योग्य, सबसे कठोर, सबसे मज़बूत व्यक्ति को मिलती हैं। जितना बड़ा घूंसा, उतनी बड़ी विजय।'' आप अपने जीवन से कितना भयानक संदेश देते हैं! जिम्री का जीवन एक कहावत बन गया (2 राजा 9:31)। उसे एला की हत्या के लिए याद किया जाएगा। जो भी किसी राजा की हत्या करेगा, वह ''जिम्री'' कहलाएगा। अपने पीछे यह कैसा नाम छोड़ना है! आप कह सकते हैं, ''शायद जिम्री की कोई सुन नहीं रहा था, या उसे कोई देख नहीं रहा था। हो सकता है कि वे इतने चतुर हों कि उन्होंने उस सबक की ओर ध्यान नहीं दिया, जो वह दे रहा था।'' अधिक सम्भावना यह है कि कुछ लोग उसके शैतानी तरीकों से प्रभावित हो गए। जब जिम्री पतन और पराजय की ओर चला तो जिन्होंने उसकी बात सुनी थी, उन्होंने ध्यान दिया होगा और अलग रास्ता पकड़ने का निश्चय किया, परन्तु उनके स्वभाव में एक अवशेष रह जाएगा, जिसे उन्हें स्पर्श करते हुए जिम्री के जीवन ने जमा

कराया था।

आमतौर पर समाज में जिम्री का योगदान अच्छे सामुदायिक जीवन के लिए नहीं बल्कि गड़बड़ी के लिए था। उसने अपने पीछे आने वालों के लिए आसान सफ़र बनाने के लिए समतल मार्ग के बजाय आसुंओं की पगडंडी छोड़ी। मार्ग को ऊबड़-खाबड़ बनाने वाले पत्थरों को चुनने के बजाय उसने कुछ पत्थर फैंक कर अपने पीछे आने वालों के लिए रास्ता कठिन कर दिया। जिम्री के बाद आने वालों के लिए जीवन और कठिन होना था, क्योंकि उन्होंने अपनी मर्जी से या ज़बर्दस्ती वह फसल काटनी थी, जिसे जिम्री के जीवन से बोया गया था। जिम्री ने निराशा और अविश्वास का एक बादल पीछे छोड़ दिया कि जिस पर फिर से मर्यादित, सम्माननीय औरपरमेश्वर का भय मानने वाले बनने के लिए इस्राएल के समुदायों के लिए विजय पाना आवश्यक था।

आप अपने पीछे एक फसल छोड़ रहे हैं, वह फसल जिसे आपको काटना है और दूसरों को काटना है, कम से कम कुछ भाग अवश्य काटना पड़ेगा। यह कैसी फसल है? कोई भी पूरी तरह से अपने आप पर, अपने लिए या अपने द्वारा नहीं जीता। हम सब एक समुदाय में रहते हैं। हम दूसरों को प्रभावित करते और दूसरों से प्रभावित होते हैं।

इस सच्चाई पर विचार करते हुए हम बच्चों के बारे में सोचने से बच नहीं सकते। वे अपने माता-पिता या उस समाज को नहीं चुनते, जिसमें उन्होंने बड़े होना है। एक दिन उन्हें एहसास होता है, और उन्हें अपने माता-पिता के साथ, उस समुदाय में जिसमें वे पैदा हुए हैं, रहना हैं। पहले ही दिन से वे उस फसल का भाग बन जाते हैं, जो किसी दूसरे ने लगाई है। उन्हें उस बाग में रहना है या उस जंगली गुलाब को जोड़ना है जिसे उनसे पहले के लोगों ने बनाया है। उन्हें उस बुआई की फसल काटनी है, जो उनसे पहले वालों ने बोई थी। इस नियम की सच्चाई हमें रुककर सोचने के लिए मजबूर करने वाली होनी चाहिए। मैं न केवल वह काटूंगा, जो मैंने बोया है, बल्कि दूसरों का बोया भी, विशेषकर आस-पास के लोग भी किसी सीमा तक उसमें से काटेंगे, जो मैंने बोया है। उन्हें वैसी ही फसल मिलेगी जो मैंने अपनी पसन्द से और अपने जीवन से उनके लिए दी है।

सारांश

निश्चय ही यदि जिम्री सही ढंग से जीवन जीता, जिसका अवसर किसी को नहीं मिलता तो वह अलग ढंग से रहता। उसने और ही रास्ता चुना होगा। वह बड़ी सावधानी से और ध्यान से बोना चुनकर जीवन जीता। पीछे देखना आगे देखने से हमेशा अच्छा होता है। जिम्री अपना जीवन दोबारा नहीं जी सकता। उसका जीवन समाप्त हो चुका है। परन्तु एक नकारात्मक अर्थ में जिम्री अपने जीवन से हमें निर्देश दे सकता है। वास्तव में परमेश्वर ने जिम्री की सलाह के बिना भी इसे सुनिश्चित किया है। अपने जीवन की इस छोटी सी जीवनी में जिम्री उसके द्वारा जो उसने किया, कहता है, ''जो बोओगे वही काटोगे; जो काटोगे वह उससे अधिक होगा जो तुमने बोया है; तुम्हारी फसल दूसरों से प्रभावित होगी; और तुम्हारी दूसरों की कटनी को प्रभावित करेगी।'' उसका जीवन वह प्रवचन देता है, जिसे सुनने की हमें आवश्यकता है। क्या हम सुनेंगे?

एक प्रचारक की कहानी बताई जाती है, जो बोने और काटने पर संदेश सुना रहा था। बड़े ज़ोरदार ढंग से उसने घोषणा की कि कटनी को कोई बदल नहीं सकता। उसने बुलंद आवाज़ से घोषणा की, ''हम बोते हैं और वही काटेंगे, जो हमने बोया है।'' प्रवचन के बाद, किसी ने उससे

पूछा, ''यदि हमने वही काटना है, जो हमने बोया है तो फिर मसीही बनने की आवश्यकता क्या है ? हम तो वही काटेंगे जो हमने किसी न किसी तरह बोया है। मसीही बनने से यह सब बदल तो नहीं जाएगा।'' एक पल के लिए प्रचारक ने विचार किया, और फिर उत्तर दिया, ''हां, आप सही कह रहे हैं। हमें वही मिलेगा जो हमने बोया है। सांसारिक उपज केवल इसलिए रद्द नहीं होगी कि हम मसीही बन गए हैं, परन्तु मसीही व्यक्ति के पास उस फसल का सामना करने में सहायता के लिए जो बेकार में बिताए जीवन से काटनी आवश्यक है, परमेश्वर, मसीह, पवित्र आत्मा और कलीसिया है।'' वह सही था, परन्तु एक और विचार जोड़ा जाना आवश्यक है: मसीह बनने से व्यक्ति को उस फसल से निपटने में सहायता ही नहीं मिलेगी जो कल से मिलने वाली कटनी है, बल्कि यह उसे आने वाले कल और अनन्तकाल के लिए बोने की सही किस्म देने की आवश्यक दिशा भी देती है।

सीखने के लिए सबक:
सावधान रहें कि आप कैसे बोते हैं क्योंकि जो कुछ आपने बोया है
उसे आपके साथ दूसरे भी काटेंगे।